नेपाली साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

डिल्लीराम शर्मा संग्रौला
विभागीय प्रमुख, संस्कृत, हिंदी, पत्रकारिता
पदमकन्या बहुमुखी कैंपस, काठमांडू

सार

परिवर्तन दुनिया का नियम है। मनुष्य अपने जीवन में कई परिवर्तन देखता, भोगता या महसूस करता आ रहा है। आज का युग तो प्रविधि का युग है या यूं कहे तो डिजिटल क्रांति का युग है। आज प्रविधि का उपयोग किए बगैर मनुष्य आगे बढ़ नहीं सकता कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल जैसे आधुनिक उपकरणों के अभाव में आदमी को जीना मुश्किल हो जाता है। आज तो AI अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अर्थात कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। लोगों का विश्वास है कि AI तकनीक विकास को गति देगी और लोगों को बेहत्तर सुविधाएँ उपलब्ध कराएगी। यह एक प्रमुख नवाचार है जो शिक्षा, तकनीक, पत्रकारिता, स्वास्थ्य, व्यापार, परिवहन, मनोरञ्जन आदि क्षेत्र में व्यापक रुप से प्रयोग हो रहा है। नेपाली साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। AI तकनीक के चलते कितने कार्य सहज हो गए हैं तो कितने कार्य सशंकित भी हो रहे हैं अर्थात इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों पर विद्वानों में बहस होता देखा जा रहा है। इस लेख में नेपाली साहित्य में AI तकनीक के बढ़ते प्रभाव के बारे में विश्लेषण किया गया है, यही इस लेख का मुख्य उद्देश्य है।

शब्द कुंजिका : कृत्रिम बुद्धिमत्ता, प्रविधि, प्रयोगशीलता, संसाधनों, रूपांतरण, अनभिज्ञ, लोकतांत्रिक,

1. विषय प्रवेश

साहित्य एक महत्वपूर्ण विधा है। इसके द्वारा मनुष्य समाज में घटित घटनाओं को, संस्कृति को, विचारधाराओं को, इतिहास को सूक्ष्म तरीके से जानते और समझते हैं। साथ ही इन सभी का संरक्षण साहित्य ही करता है। प्राचीन काल से लेकर आज तक साहित्य ने समाज के विकास में प्रभावकारी भूमिका निर्वाह किया है। नेपाली साहित्य का एक लंबा इतिहास है जो मौखिक परंपरा से लेकर लिखित और मुद्रित साहित्य तक अपने आप में महत्वपूर्ण है। आज नेपाली साहित्य भी AI तकनीक से प्रभावित होता दिख रहा है। AI तकनीक के कारण सृजनात्मक लेखन, अनुवाद, संपादन, प्रकाशन, समीक्षा, पाठ विश्लेषण में नई संभावनाओं के साथ-साथ चुनौतियाँ भी बरकरार है। नेपाली साहित्य की विभिन्न विधाएँ जैसे कविता, लघु कहानी, समालोचना, शोध आदि जैसे क्षेत्रों में AI तकनीक का प्रभाव या प्रयोग देखा जाता है। AI तकनीक एक कंप्यूटर प्रणाली है, यह भाषिक संरचना को समझने, विश्लेषण करने और नए पाठ निर्माण करने का कार्य करती है।

2. AI और इसकी खासियत

श्रीमती आक्काताई रामगोंडा पाटील का कहना है - ``AI विज्ञान की वह शाखा है जिसमें मशीनों को इस प्रकार विकसित किया जाता है कि वे मानव जैसी सोच, विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता प्रदर्शित कर सकें। कम्प्यूटर विज्ञान का यह उपविभाग न केवल मानव श्रम को कम करता है बल्कि कार्यों को अधिक प्रभावी और

तेज बनाता है।'' AI तकनीक की खासियत यह है कि यह कंप्यूटर में, वेबसाइट में, गूगल में, विकिपीडिया में अर्थात इंटरनेट में मौजूद अनगिनत पुस्तकों, लेखकों, रचनाओं को पढ़कर तुरंत मांगी गई सामग्रियाँ उपलब्ध कराती है। वह इंटरनेट में पहले से ही मौजूद सामग्रियों से ही नई सामग्री तैयार करती है। यही उसकी ताकत है। उसका लेखन सभी लेखकों से बना है। भारत के युवा आलोचक शशि भूषण मिश्र का कहना है"साहित्य में ए आई का इस्तेमाल विचारों और विषय वस्तु के विकास में मददगार हो सकता है, लेकिन इसके परिणाम पूरी तरह मौलिक नहीं हो सकते हैं । ए आई मॉडल ढेर सारे मौजूद डाटा पर प्रशिक्षित होते हैं और ऐसी विषय वस्तु तैयार करते हैं जो इंटरनेट पर पहले से मौजूद हैं।"

3. AI के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष

AI तकनीक के सकारात्मक पक्ष के लोगों का कहना है कि AI तकनीक एक प्रयोगशीलता है। हमें समय के अनुसार चलना चाहिए, अन्यथा हम पीछे पड़ जाएंगे। समय के अनुसार चलने वाला ही हमेशा समाज के केंद्र में रहता है। वे उदाहरण देते हुए आगे कहते हैं कि पहले के समय को और आज के समय को देखने पर हमें पता चलता है कि हम कितने परिवर्तनों को अपना चुके हैं। परिवर्तन को और नव निर्मित संसाधनों को अपनाने से हमें ही कार्य करने में सहजता होगी और इंसान की प्रकृति ही है कि सहजता का चयन करना। समय AI तकनीक का मांग करता है तो हम उसे वरदान मानकर स्वीकारें। यह प्रकाशन क्षेत्र में लागत को बचा रहा है। पैसे और समय दोनों को बचा रहा है। साथ ही मानव त्रुटी से बचा रहा है। शुद्ध वर्तनी और शुद्ध लेखन हमें देखने को मिल रहा है। अनुवाद भी आसान हो गया है। जिसके कारण किसी एक भाषा की पुस्तक को विश्व के लोग अपनी चाहत की भाषा में पढ़ या समझ पाता है। साथ ही यह किताब के लेआउट, कवर, डिजाइन, फ्रंट चयन, डेटा विश्लेषण में भी मददगार हो रहा है। साहित्यिक विधा में, अनुसंधान में, समालोचना आदि में सहयोगी साबित हो रहा है, तो क्यों न हम इसका सदुपयोग न करें ? शिक्षण एवं प्रशिक्षण में भी AI तकनीक एक प्रभावी साधन के रुप में उभरी है जो विद्यार्थियों के रचनात्मक लेखन की तकनीक सिखाने और लेखकीय अभिव्यक्ति को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध हो रही है।

दूसरी ओर इसके विपक्षी इसकी चुनौतियों व नकारात्मकता की ओर इंगित करते हैं। उनका कहना है कि AI तकनीक प्रमाणिकता, नैतिकता, कॉपी राइटर और पारंपरिक पठन संस्कृति में प्रश्न खड़ा करती है। AI तकनीक के कारण आज के दिनों में मौलिकता की क्षति हो रही है। लोगों की सृजनशीलता में बाधा पहुँच रही है। मेहनत में कमी आ रही है। AI तकनीक लेखक की लेखन कला की वास्तविकता और मानवीय संवेदना को महसूस कर नहीं सकती। लेखक की लेखन प्राकृतिक होता है, परंतु AI तकनीक से ऐसा संभव नहीं होता। वह केवल सुझाव दे सकती है, लेखक की तरह वह संवेदनशील नहीं हो सकती है। वह इंटरनेट में स्थित सामग्रियों को छलनी करके हमें देती है। वह मनुष्य के चेहरे को पढ़ सकती है हृदय को नहीं। AI तकनीक में मौलिकता का अभाव होता है। भले ही भाषा आकर्षक तथा शुद्ध हो परंतु निजी अनुभव से अनभिज्ञ होती है। AI तकनीक ने साहित्य को लोकतान्त्रिक स्वरूप तो दी है परन्तु साहित्यिक गुणवत्ता से यह प्रभावित हुई है, इससे पाठकों में गहराई से पढ़ने की क्षमता में कमी आई है। साहित्य के संबंध में तो कहा गया है कि कई सारे लोग इसके प्रयोग से कवि, कहानीकार, अनुवादक बने हैं। यहां तक की एक वर्ष में तीन चार संग्रह निकाल लिए हैं, इससे बड़ा दुरुपयोग

और क्या हो सकता है। AI तकनीक से लिखित साहित्यिक विधाओं से साहित्यकार बनना वास्तविक साहित्यकारों का उपहास है।

4. AI और नेपाली साहित्य

नेपाली साहित्य का अध्ययन करने पर इसका शुरुआती चरण मौखिक परंपरा से विकसित माना जाता है। फिर हस्तलिखित, ताम्रपत्र, भोजपत्र, शिलालेख आदि होते हुए मुद्रण में प्रवेश हुआ है। नेपाल में 20वीं शताब्दी से पत्र-पत्रिका, रेडियो, टेलीविजन जन स्तर तक पहुँचने लगे। 20 वीं शताब्दी में नेपाली साहित्य पर्याप्त लिखे गए और 21वीं शताब्दी एक तरह से प्रविधि की शताब्दी ही कही जा सकती है। इस समय में इंटरनेट, सामाजिक संजाल, ई बुक, ब्लॉग आदि ने नेपाली साहित्य को डिजिटल स्वरूप में विस्तार किया। गूगल ने महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह किया परंतु अब तो गूगल से बढ़कर AI तकनीक का प्रवेश हो गया है। AI तकनीक डिजिटल पाठ में सहयोगी है। यह नेपाली लिपि में सबको सहजता से कार्य करने में सहयोग कर रही है। ऑनलाइन शब्दकोश से लोगों को सहायता कर रही है। आज अपने उपकरण के माध्यम से कविता, कहानी, ग़ज़ल, निबंध, समीक्षा जैसी साहित्यिक विधाओं में सहयोग कर आश्चर्य चकित कर रही है। AI तकनीक के माध्यम से नेपाली भाषा में भी छंदबद्ध कविता, मुक्तक, हाईकू देखा जा सकता है। परंतु AI तकनीक के सहयोग से कविता, कहानी, ग़ज़ल आदि साहित्यिक विधा को मौलिक नहीं माना जा सकता। लोग इसकी सहायता से संग्रह भी निकलते होंगे, परंतु उसे मौलिक नहीं कहा जा सकता।

AI तकनीक ने नेपाली साहित्य के व्याकरण और वर्तनी अशुद्धता पर भी महत्वपूर्ण सुधार का कार्य किया है। इससे भाषा के सुधार में सहयोग पहुंचा है। इससे सबसे ज्यादा लाभ नव लेखकों को मिल रहा है। इसने नव लेखकों में आत्मविश्वास बढ़ाया है और लिखने के लिए अभिप्रेरित भी किया है।

AI तकनीक आज कल शोध कर रहे शोधार्थियों के लिए भरपूर सहयोग कर रही है। शोधार्थी जिस प्रकार का शोधालेख चाहते हैं उसी प्रकार का शोधालेख तैयार कर देती है। यह शैलीगत अध्ययन, बिंब, प्रतीक, प्रवृत्ति विचारधारा, शब्द आवृत्ति जैसे पक्षों में उपयोगी बना है। यह साहित्यिक समालोचना को तथ्यगत बनाने में भूमिका निर्वाह करती है। AI तकनीक आधारित अनुवाद प्रणाली ने अनुवाद में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नेपाली साहित्य को अन्य भाषा में और अन्य भाषा के साहित्य को नेपाली में रूपांतरण करने में सहज बना दिया है। हालांकि अनुवाद एक चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि इसे करते समय अनुवादक को लेखक के भाव और संदर्भ को समझना आवश्यक होता है। दूसरी बात जिस भाषा के साहित्य को अनुवाद करना है उस भाषा के सांस्कृतिक तत्वों की सूक्ष्मता को जानना अत्यंत आवश्यक होता है। AI तकनीक के लिए भाव, संदर्भ और सांस्कृतिक तत्व के लिए चुनौती ही है।

AI तकनीक के प्रयोग से नेपाली साहित्य में कई सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। AI तकनीक के सहयोग से साहित्य सृजन में सहयोग अवश्य पहुंचा है। यह तथ्यांक संकलित करके देती है और सर्जक उन तथ्यांक के आधार पर साहित्य सृजन करते हैं। AI तकनीक नव लेखक के लिए मनपसंद प्रणाली है। उसके लिए यह मार्गदर्शक है क्योंकि इसकी सहायता से वह कई तथ्यों से अवगत हो सकता है। AI तकनीक के आगमन के कारण भाषिक त्रुटियाँ कम दिखने लगी हैं। नेपाली भाषा में व्याकरणिक त्रुटियाँ, वर्तनी त्रुटियाँ, अक्सर देखी जाती

थी, परंतु अब एकरूपता देखने को मिल रही है। शोधार्थी के लिए यह वरदान सरह है क्योंकि यह तुरंत सहयोग करती है। इसी तरह समालोचना में भी इसकी भूमिका सराहनीय है। AI तकनीक के कारण नेपाली साहित्य भी विश्व मंच पर पहुँच रहा है।

AI तकनीक की सबसे बड़ी चुनौती मौलिकता का संकट है। इसी तरह भावनात्मक गहराई का अभाव भी। AI तकनीक के कारण पेशेवर लेखक, अनुवादक और संपादक की भूमिका में असर पड़ सकता है। कई AI तकनीक प्रयोग में पोख्त रहने वाले लेखक, अनुवादक और संपादक की भूमिका भी निर्वाह कर सकते हैं जिसके कारण वे (पेशेवर) प्रभावित हो सकते हैं।

प्रविधि का जमाना होने के कारण हमें प्रविधि मैत्री बनना चाहिए और AI तकनीक को सहायक उपकरण के रूप में लेना चाहिए। AI तकनीक संरचना, भाषा और विश्लेषण में सहयोगी होगी। लेखक को AI तकनीक के उक्त सकारात्मक पक्ष को अपनाते हुए मानवीय अनुभूति, चेतना और सामाजिक संदर्भ के साथ आगे बढ़ना होगा। यह निर्विवाद सत्य है कि संरचनात्मक आत्मा लेखक या सर्जक में ही निहित होती है। नेपाली साहित्य AI तकनीक और मानव सृजन के सहकार्य में अवश्य समृद्ध होगा।

5. निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि AI एक प्रविधियां उपकरण है जो वर्तमान समय का चर्चित उपकरण है। AI तकनीक के कुछ नकारात्मक कार्य होते हुए भी इसके सकारात्मक पक्ष को अपनाना होगा और समय के अनुसार हमें चलना होगा। नेपाली साहित्य में AI तकनीक का प्रभाव बढ़ रहा है यह सृजनात्मक लेखन, अनुवाद, संपादन, अनुसंधान में नई दिशा दे रही है, अपितु इसके साथ ही मौलिकता, भावनात्मक गहराई और साहित्यिक मूल्यों के प्रश्न भी उठ रहे हैं। AI तकनीक न तो पूर्णत सकारात्मक है और न पूर्णत नकारात्मक। इसे अंधानूकरण न करके विवेकपूर्ण तरीके से प्रयोग करना चाहिए। ऐसा करने पर नेपाली साहित्य और सशक्त तथा विश्व व्यापी बनने की संभावना स्पष्ट दिखता है।

संदर्भ सूची

- बराल, ऋषिराज (वि.सं.2017), समालोचना का आधार, विद्यार्थी पुस्तक भंडार, काठमांडू।
- शर्मा, मोहनराज (वि.सं.2075) साहित्य सिद्धांत, एक कथा बुक्स, काठमांडू।
- शर्मा, रमेश (2023), कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्यिक रचनात्मकता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,।
- नेपाली भाषा प्रविधि संबंधी लेख, मदन पुस्तकालय डिजिटल संग्रह.
- MC Carthi, J. (2007) what is Artificial Intelligence? Stanford University.
- Russell S. and Norvig P. (2021), Aartificial Intelligence: A Modern Approach, Pearson.

❑❑❑